ग्वालियर के सर्वांगीण विकास में माधवराव सिंधिया द्वितीय का योगदान

डॉ. के. रतनम्* एवं पंकज यादव**

ग्वालियर पृष्ठभूमि

ग्वालियर का सिंधिया राज्य मराठा संघ का शक्तिशाली अंग था। इसकी भौगोलिक स्थिति सामरिक एवं राजनैतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। यह आधुनिक मध्य प्रदेश के उत्तरी, मध्य एवं पश्चिमी भाग के साथ चंबल के आसपास एवं राजपूताने के कुछ भागों तक विस्तृत था। ग्वालियर 250 34′ – 26° 21′ उत्तरी अक्षांश एवं 77° 44′ – 78° 50′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। 1968 समुद्र तट से ग्वालियर भू–भाग लगभग 600 फीट ऊँचाई पर स्थित है।

ग्वालियर अपने प्राचीन एवं गौरवपूर्ण इतिहास के लिए प्राचीनकाल से ही जाना जाता है। ग्वालियर में प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक का इतिहास निर्वाध रूप से प्राप्त होता है। ग्वालियर का नाम गोपाद्रि, गोपागिरी, ग्वालिये, ग्वाला, गोपाचल आदि शब्दों का अपभ्रंश है और परिवर्तित होते–होते ग्वालहेर एवं यूरोपियनों (अंग्रेजी) द्वारा ग्वालियर कहा जाने लगा।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

माधवराव सिंधिया द्वितीय का जन्म 10 मार्च 1945 को मुम्बई (महाराष्ट्र) (समुद्र महल) में हुआ था। माधवराव सिंधिया, जीवाजीराव सिंधिया एवं विजयाराजे सिंधिया की पाँच संतानों में एकमात्र पुत्र थे माधवराव, जीवाजीराव एवं विजयाराजे सिंधिया के पाँच पुत्र पुत्रियों में से तीसरी संतान थे।

माधवराव सिंधिया जी का नामकरण माधवराव सिंधिया प्रथम (1894–1925 ई.) जिन्हें ग्वालियर की जनता प्यार से माधो महाराज कहती थीं, के नाम पर किया गया था। राजवंशीय परम्पराओं के अनुसार दादा के नाम पर पोते का नामकरण करने का रिवाज था।

शैक्षणिक पृष्ठभूमि

माधवराव सिंधिया जी की प्रारम्भिक शिक्षा सिंधिया स्कूल ग्वालियर फोर्ट, ग्वालियर (म.प्र.) में सम्पन्न हुयी। उच्च शिक्षा हेतु वे ब्रिटेन के बिनचेस्टर कॉलेज गये। न्यू कॉलेज यूनिवर्सिटी ऑफ आक्सफोर्ट से उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण की।

* प्राध्यापक (इतिहास) महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय, ग्वालियर
** महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय, ग्वालियर

वैवाहिक पृष्ठभूमि

माधवराव सिंधिया का विवाह 9 मई 1966 को नेपाल के महाराजा शमशेर जंगबहादुर राणा और उनकी पत्नी रानी इन्द्राकुमारी की पुत्री प्रतिमा राजे लक्ष्मी देवी (माधवीराजे सिंधिया) से सम्पन्न हुआ। इस विवाह के उपरांत इनकी दो संताने हुयीं, जिसमें एक पुत्री चित्रांगदा राजे सिंधिया का जन्म 14 फरवरी 1967 को हुआ। इनका विवाह जम्मू कश्मीर राज्य के युवराज विक्रमादित्य के साथ 11 दिसम्बर 1987 को सम्पन्न हुआ। दूसरी संतान के रूप में इनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी, जिनका नाम ज्योतिरादित्य (1 जनवरी 1971) रखा गया। इनका विवाह दिसम्बर 1994 में बड़ौदा महाराज संग्राम सिंह गायकवाड़ की पुत्री प्रियदर्शिनी राजे के साथ सम्पन्न हुआ।

राजनैतिक पृष्ठभूमि

माधवराव सिंधिया सन् 1971 से लेकर जीवन पर्यन्त नौ बार भारतीय लोकसभा के संसद सदस्य रहे। वह अपने राजनैतिक जीवन में संसद सदस्य का काई भी चुनाव नहीं हारे। पहला चुनाव वे सन् 1971 में गुना संसदीय क्षेत्र से मात्र 26 वर्ष की उम्र में विजयी होकर भारतीय संसद में पहुँचे। इनके प्रमुख संसदीय क्षेत्र गुना संसदीय क्षेत्र व ग्वालियर संसदीय क्षेत्र रहे।

माधवराव सिंधिया ने केन्द्रीय सरकार में विभिन्न मंत्रालयों में मंत्री के रूप में अपने प्रशासनिक कौशल का परिचय दिया।

1. 1984 – 1986 ई. तक केन्द्र में रेलराज्य मंत्री
   1986 – 1989 ई. तक केन्द्र में रेलराज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
2. 1991 – 1993 ई. तक केन्द्र में नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन मंत्री (केबीनेट स्तर)
3. 1995 – 1996 ई. तक केन्द्र में मानव संसाधन एव विकास मंत्री (केबीनेट स्तर)

ग्वालियर के सिंधिया राजघराने का सक्षिप्त परिचय

सत्रहवीं शताब्दी में मराठा शक्ति का उत्थान मध्ययुगीन भारतीय इतिहास की एक अद्वितीय एव महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। मराठों की उत्पत्ति के इसी ऐतिहासिक विकासक्रम में सिंधिया राजवंश के उत्थान का इतिहास निहित है।

सिंधिया राजवंश के उत्तराधिकारी

सिंधिया राजवंश में अनेक उत्तराधिकारी हुए जिनका इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान हैः–

1.	राणोजी सिंधिया	–	1726–1745 ई.
2.	जयप्पा सिंधिया	–	1745–1759 ई.
3.	दत्ता जी सिंधिया	–	1759 ई.
4.	जनकोजी सिंधिया	–	1760–1761 ई.

5.	महादजी सिंधिया	–	1761–1794 ई.
6.	दौलतराव सिंधिया	–	1794–1827 ई.
7.	जनकोजी राव सिंधिया	–	1827–1843 ई.
8.	जयाजीराव सिंधिया	–	1843–1886 ई.
9.	माधवराव सिंधिया प्रथम	–	1886–1925 ई.
10.	जीवाजीराव सिंधिया	–	1925–1961 ई.
11.	माधवराव सिंधिया द्वितीय	–	1961–2001 ई.
12.	ज्योतिरादित्य माधवराव सिंधिया	–	2001–अब तक

ग्वालियर के विकास में माधवराव सिंधिया जी का योगदान

माधवराव सिंधिया, राजीव गांधी के प्रधानमंत्री काल में सर्वप्रथम 1984–1986 ई. तक रेल राज्यमंत्री के पद पर रहे। उनकी योग्यता, कार्यशैली एवं प्रशासनिक क्षमता से प्रभावित होकर राजीव गांधी ने उन्हें रेल राज्यमंत्री, स्वतंत्र प्रभार का दायित्व 1986 ई. में सौंपा। रेल मंत्रालय में रहते हुए उन्होंने अपनी संपूर्ण कार्यक्षमता एवं प्रशासनिक कौशल का परिचय दिया, जिससे रेल्वे की कार्यप्रणाली पर खासा प्रभाव पड़ा।

माधवराव सिंधिया, नरसिंहराव के प्रधानमंत्रीत्व काल में नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन मंत्रालय में केबीनेट मंत्री रहे। वे इस पद पर 1991 से 1993 ई. तक रहे। माधवराव सिंधिया ने नागरिक उड्डयन के क्षेत्र में प्रगति एवं प्रतिस्पर्द्धा को बढ़ाने के लिए इंडियन एअर लाईन्स और एअर इण्डिया में व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाया था। माधवराव सिंधिया के हाथों में नागरिक उड्डयन क्षेत्र गतिशील एवं प्रगतिशील होता गया।

भारतीय पर्यटन व यात्रा प्रबंध संस्थान की स्थापना

माधवराव सिंधिया ने अपने अथक प्रयत्नों से ग्वालियर में 'भारतीय पर्यटन व यात्रा प्रबंध संस्थान' की स्थापना करवायी, जिसे जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से जमीन प्राप्त करके बनवाया गया। यह संस्थान राष्ट्रीय महत्व का है और इसके पाठ्यक्रम को विदेशी संस्थाओं की तर्ज पर बनाया गया है। इस संस्थान के बन जाने से देश में पर्यटन क्षेत्र के लिए कुशल प्रबंधकों की आवश्यकता काफी हद तक पूरी हुई साथ ही रोजगार के अवसर भी पैदा हुए।

माधवराव सिंधिया, नरसिंह राव के प्रधानमंत्रीत्वकाल में 1995–1996 ई. तक मानव संसाधन एव विकास मंत्रालय में केबीनेट मंत्री रहे। मंत्री के रूप में उन्होंने अपने विशिष्ठ कार्यप्रणाली से अनेक कार्यों को अंजाम दिया। प्राथमिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, विश्वविद्यालयीन शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, युवा एव खेल के क्षेत्र में संसकृति आदि अनेक क्षेत्रों में ऐतिहासिक कार्य किया।

माधवराव सिंधिया ने शिक्षा के सार्वभौमिकरण पर अत्यधिक बल दिया। उनका उद्देश्य शताब्दी के अन्त तक भारत को पूर्ण साक्षर करने का था। माधवराव सिंधिया ने महिला एवं बाल विकास पर अपने कार्यकाल के दौरान अत्यधिक बल दिया। माधवराव सिंधिया ने

शैक्षणिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के विकास के लिए अनेक योजनाओं को तत्परता से लागू करवाया।

ग्वालियर का विकास

माधवराव सिंधिया ने जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के विकास के लिए अनेक कार्य किये। जीवाजी विश्वविद्यालय में अनेक नए कोर्सों एवं संस्थानों की स्थापना उनके कार्यकाल में हुई। विश्वविद्यालय में एम.बी.ए., एम.बी.ई., की शिक्षा को विधिवत् मान्यता प्रदान करवायी एवं पृथक से मैनेजमेन्ट भवन का निर्माण भी करवाया। पर्यटन प्रबंधन की शिक्षा को भी प्रारंभ करवाया। विश्वविद्यालय में लाइफ साइंस विभाग की स्थापना करवायी। कैमीकल सेल्स मैनेजमेन्ट एवं पर्यावरण विज्ञान के नये विभागों की स्थापना करवायी। पृथक से कम्प्यूटर विभाग की स्थापना करवायी, जिसके लिए मंत्रालय से धन राशि उन्होंने उपलब्ध करवायी।

माधवराव सिंधिया ने ग्वालियर में एशिया का प्रथम राष्ट्रीय सूचना एवं प्रबंध संस्थान की स्थापना करवायी। यह संस्थान दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, खड़गपुर एवं कानपुर में स्थापित आई.आई.टी. कॉलेजों के मुकाबले का महत्वपूर्ण संस्थान है। माधवराव का मानना था कि भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना से ग्वालियर भारत के नक्शे पर विशेष क्षेत्र के रूप में उभर सकेगा।

माधवराव सिंधिया ने अपने कार्यकाल में देशके सर्वप्रथम एवं एशिया के सबसे बड़े शारीरिक शिक्षामहाविद्यालय एल.एन.आई.पी.ई., ग्वालियर को सम–विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया। इससे ग्वालियर को दुनिया के खेल जगत में एक विशिष्ट पहचान मिली। उन्होंने ग्वालियर में इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट की स्थापना करवायी। यह संस्थान वर्तमान में अनेक युवाओं को रोजगार उपलब्ध करा चुका है।

माधवराव सिंधिया ने देश के विभिन्न जिलों में केन्द्रीय विद्यालयों एवं जवाहर नवोदय विद्यालयों की स्थापना करवायी। देश के विभिन्न हिस्सों में शिक्षा गारण्टी योजना प्रारंभ हुई।

सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण

माधवराव सिंधिया जी ने देश की सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण के लिए भी प्रयास किये। माधवराव सिंधिया ने ग्वालियर में बहुआयामी कला केन्द्र की स्थापना को स्वीकृति अपने कार्यकाल में प्रदान की।

ग्वालियर के आधुनिकीकरण में राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों की स्थापना

माधवराव सिंधिया ने देश एवं प्रदेश में कई राष्ट्रीय स्तर के शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना अपने मंत्रीत्व कार्यकाल में करवायी। ग्वालियर में एशिया का प्रथम 'राष्ट्रीय सूचना एवं प्रबंध संस्थान' एवं 'इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेन्ट' तथा 'पर्यटन एवं यात्रा प्रबंध संस्थान' की स्थापना करवायी।

इस प्रकार माधवराव सिंधिया ने शैक्षणिक क्षेत्र में अनेक अनुकरणीय कार्यों को साकार रूप प्रदान किया एवं अपने अथक प्रयासों से ग्वालियर शहर को एजूकेशनल केन्द्र के रूप में परिणित कर दिया।

माधवराव सिंधिया ने आर्थिक क्षेत्र के उन्नयन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। माधवराव सिंधिया आधुनिकीकरण एवं निजीकरण के महत्व को समझते थे। माधवराव सिंधिया वैश्वीकरण एवं आर्थिक सुधारों के जबरदस्त समर्थक थे।

माधवराव सिंधिया ने ग्वालियर अंचल में औद्योगिक उन्नति के लिए हमेशा कार्य किया। मालनपुर औद्योगिक क्षेत्र में 1986 ई. में केन्द्रीय उद्योग मंत्री नारायणदत्त तिवारी को माधवराव सिंधिया ग्वालियर लाये और उन्होंने कई उद्योगपतियों से उन्हें मिलवाया। इससे तत्काल ही करोड़ों रूपये का निवेश मालनपुर में हुआ। ग्वालियर व्यापार मेला, ग्वालियर के औद्योगिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्र के विकास में अत्यंत सहायक हुआ। माधवराव सिंधिया ने मध्यप्रदेशका पहला तथा देश का दूसरा 'दस्तकारी हॉट' का शिलान्यास मेले में किया। इससे प्रदेश एवं देश के हस्तशिल्प को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहचान मिल सकेगी।

माधवराव सिंधिया ने विजयपुर में 'नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (एन.एफ.एल.)' कारखाने की स्थापना करवायी। गैस पर आधारित यह पहला अन्तर्देशीय कारखाना है। यह कारखाना अब उर्बरक उत्पादन में कार्यरत है।

माधवराव सिंधिया ने चंदेरी के वस्त्र शिल्प साड़ियों के उद्योग को बढ़ावा देने के लिये हर संभव प्रयास किये। उन्होंने चंदेरी के बुनकरों को नवीन तकनीकी सुधार अपनाने के लिए प्रेरित किया।

संचार माध्यमों का विकास

माधवराव सिंधिया बदलते हुए सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य में संचार माध्यमों की भूमिका को अच्छी तरह से पहचानते थे। इस कारण उन्होंने ग्वालियर अंचल में अत्याधुनिक संचार माध्यमों की उपलब्धता सुनिश्चित की।

इस प्रकार माधवराव सिंधिया ने रेल्वे, नागरिक उड्डयन एवं पर्यटन तथा मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय के मंत्री के रूप में अपने प्रशासनिक कौशल से सभी को चौंका दिया था। उन्होंने एक योग्य प्रशासक के रूप में विभिन्न मंत्रालयों का कुशलता से संचालन किया। वह लोकसभा में विपक्षीय दल काँग्रेस के उपनेता के पद पर भी रहे एवं भावी प्रधानमंत्री के रूप में देखे जाने लगे थे। अपने कार्य करने के तरीके से उन्होंने एक विशिष्ट कार्य संस्कृति का विकास किया और कुशल प्रबंधक के रूप में ख्याति प्राप्त की।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कृष्णन, व.सु. – म.प्र. जिला गजेटियर, ग्वालियर, भोपाल, 1968, पृ. 2।
2. तिवारी, सरिता–ग्वालियर के सिंधिया शासकों का राजस्व प्रशासन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, पृ. 11।
3. लुअर्ड, सी.ई.–गजेटियर रियासत, ग्वालियर, पुनर्मुद्रण, भोपाल 1996, पृ. 2।

4. सिन्हा, मृदुला–राजपथ से लोकपथ पर, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली एवं शर्मा, राजेन्द्र–पुण्य स्मरण, 2003, श्री राधिका प्रकाशन प्रा.लि., भोपाल, 2003।
5. शर्मा, आनंद कुमार (2006) आधुनिक ग्वालियर के प्रणेता सिंधिया।
6. शिखर वार्ता–(मासिक पत्रिका), भोपाल, अक्टूबर, 2001, पृ. 17।
7. प्रतियोगिता दर्पण, आगरा, दिसंबर, 2001, पृ. 787।
8. भारती, राजेन्द्र–स्मृति ग्रंथ, पृ. 75।
9. डॉ. प्रकाश सिंह बिसेन, पूर्व कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से साक्षात्कार पर आधारित।
10. कटारे, रामकिशन–माधव स्मृतिका, नसिया जैन मंदिर, ग्वालियर, 2005, पृ. 05।
11. माधवराव सिंधिया स्मृति–व्याख्यान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, 10 मार्च, 2002, पृ. 13।
12. दैनिक भास्कर, ग्वालियर, 09 सितंबर, 1995।
13. डॉ. प्रकाश सिंह बिसेन–पूर्व कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से साक्षात्कार।
14. भारती, राजेन्द्र–स्मृति ग्रंथ, पृ. 164।
15. भारती, राजेन्द्र–स्मृति ग्रंथ।
16. दैनिक आचरण, ग्वालियर, 17 अगस्त 1995।
17. भारती, राजेन्द्र–स्मृति ग्रंथ, पृ. 164।
18. वही।
19. भारती, राजेन्द्र–स्मृति ग्रंथ।
20. शर्मा, आनंद कुमार–आधुनिक ग्वालियर के प्रणेता सिंधिया ।
21. द हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली, 29.09.02
22. शर्मा, आनंद कुमार, आधुनिक ग्वालियर के प्रणेता सिंधिया, दैनिक नई दुनिया, ग्वालियर 10.03.06
23. पाण्डेय, डॉ. केशव–केशव प्रयास, पृ. 29।
24. रमेश शर्मा, निज सचिव से व्यक्तिगत साक्षात्कार पर आधारित।
25. अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन प्रधानमंत्री।